मई, 2024

e publication
क्रमांक 17

मासिक पशुपालन निर्देशिका

लाला लाजपत राय पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, हिसार (हरियाणा)

पशुओं में नयी तुड़ी जनित पाचन समस्या

- आमतौर पर गेंहू की कटाई के बाद नयी तूड़ी के इस्तेमाल से पशुओं में पाचन सम्बन्धी समस्या जैसे कब्ज़/बंधा लगना या दस्त लगने की समस्या हो सकती हैं|

जुगाली करने वाले पशुओं का पाचनतंत्र

- इनके पेट के 4 हिस्से होते हैं: रूमन, रेटिकुलम, ओमेंसम और अबोमेसम |
- जुगाली करने वाले पशुओं में आहार का पाचन सूक्ष्म जीवों द्वारा फर्मेंटेशन किया जाता हैं | आहार में एकदम बदलाव से सूक्ष्म जीवो का रूमन में संतुलन बिगड़ जाता हैं और पशुओ में पाचन सम्बन्धी समस्या हो जाती हैं|

"स्वस्थ पाचन = स्वस्थ रूमेन"

बचाव :

- नई तुड़ी को एकदम से पशु आहार में सम्मिलित ना करे| उसे धीरे धीरे 07 से 10 दिनों में मात्रा को बढ़ाते हुए सम्मिलित करे|
- पुरानी तुड़ी को नयी तुड़ी आने तक कुछ मात्रा में बचा कर रखे और नयी तुड़ी के साथ मिला कर दे।
- शुरुआत में पुरानी तुड़ी की मात्रा अधिक रखे, और धीरे धीरे नयी तुड़ी की मात्रा बढाते जाए व पुरानी तुड़ी की मात्र कम करते जाए|
- नई तुड़ी को पहले छान ले व कुछ घंटे भिगो कर भी रख सकते हैं, जिससे नयी तुड़ी अधिक पचने योग्य बन जाती हैं|
- पशुपालक पशु को सेंधा नमक, हरड, हींग इत्यादि पशुचिकित्सक की सलाह से खिला सकते हैं, साथ ही पशु का पाचन को बढाने के लिए प्रोबायोटिक जैसे यीस्ट कल्चर आदि चाट में दे सकते हैं।

नयी तूड़ी की वजह से पशुओ में बंधा/कब्ज़ लगने पर क्या करे?

- पशुचिकित्सक की सलाह से पशु को कब्ज़ खोलने के लिए अरंडी का तेल, पैराफीन, अलसी तेल पिला सकते हैं|
- गरमुंडा के फल और जड़ो का पाउडर रोजाना 20 ग्राम प्रति 100 किलो शरीर के वजन के अनुसार खिलाने से पशु में बंधे/कब्ज़ की समस्या से आराम मिल सकता हैं|
- अफारा हो तो 200 ml अरंडी के तेल को गरम पानी के साथ अच्छे से मिला कर पशु हर 4-6 घंटो के अंतराल में पिला सकते हैं|
- पशुओ में दस्त लगने की स्थिति मे : नीम, अनार, अमरूद के पत्तो, सूखी अधरक व गुड के साथ चिकित्सीय परामर्श से दे सकते हैं।

कोई भी ज़हरीली दवा (कीटनाश्क स्प्रे) आदि तुड़ी के साथ भंडारण/स्टोर में न रखें ।

कृषि आधुनिकीकरण व गेंहू कटाई मशीनों द्वारा होने से तुड़ी में सूल, मिट्टी की मात्रा अधिक होती हैं| अतःतुडी जरूर छाने।

मई मास के पशुपालन सम्बन्धी कार्य

- ग्रीष्म काल में पशु आहार दिन के ठंडे समय में (सुबह एवं शाम) दें ।
- भैंस को काले रंग व सीमित पसीने की ग्रंथियां होने से गर्मी का तनाव अधिक होता हैं, अतः दिन में 2-3बार नहलाएं, स्वच्छ एवं ठंडा पानी हो सके तो 24 घंटे उपलब्ध रखें ।

व्हाट्सअप्प ग्रुप से जुडें: प्रगतिशील पशुपालक ग्रूप से जुड़ने हेतु 930-000-0857 व्हाट्स अप्प मेसेज भेजे ।

डॉ देवेन्द्र सिंह, डॉ सुजोय खन्ना एवं डॉ ज्योति शुन्ठवाल

विस्तार शिक्षा निदेशालय, लुवास